आज 03/07/2023

लौकी की वैज्ञानिक खेती कर लाभ उठायें किसान

❑ खांसी–बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है लौकी की सब्जी

डॉ. संजय कुमार ।

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 2 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा की उद्यान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार ने किसानों हेतु *खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती* विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर कुमार ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ कुमार ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • सोमवार • 3 जुलाई • 2023

ारिश में लौकी की वैज्ञानिक खेती से कमा सकते हैं लाभ

कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर संजय।

कृषि वैज्ञानिक की किसानों को सलाह

लौकी सेहत के लिए भी लाभकारी

बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जुलाई तक

ुर (एसएनबी)। खर आजाद कृषि एवं ाक विश्वविद्यालय कानपुर नपति डॉ आनंद कुमार सिंह ईश पर रविवार को कृषि केंद्र जाजपुर वंजारा के वैज्ञानिक डॉ.संजय कुमार ानों को एडवाइजरी जारी हा कि वह वर्षा ऋतु में की वैज्ञानिक खेती करके कमा सकते हैं।

न्होंने कहा कि लौकी ीय महत्वपूर्ण सब्जी है। से विभिन्न प्रकार के व्यंजन यता, कोफ्ता, हलवा, खीर वनते हैं। औषधीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी गम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने वताया कि इसके मुलायम में प्रोटीन, कार्वोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में विटामिन पाए जाते हैं। इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के तक विस्तृत रूप में की जाती है।

न्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वताया लौकी के वीज के अंकुरण के लिए 30-35 डिग्री सेंटीग्रेड और ी वढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि लौकी की खेती के लिए वलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिसका पीएच मान 6-7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने वताया कि लौकी की वुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक है। इसकी उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी वहार, आर्का वहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि है।

उन्होंने वताया कि लौकी का वीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। लौकी की अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। एक स्थान पर दो-तीन वीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर वुवाई करना चाहिए। उन्होंने वताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते है तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष: 8, अंक : 37 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, सोमवार
03 जुलाई, 2023
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com

खरीफ (वर्षा ऋतु) में लौकी की वैज्ञानिक खेती कर किसान लें लाभः डॉक्टर संजय कुमार

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा की उद्यान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार ने किसानों हेतु खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर कुमार ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ कुमार ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

लौकी के सेवन से पेट व खांसी में मिलती है राहत

खरी में लौकी की वैज्ञानिक खेती कर किसान लें लाभ

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा की उद्यान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार ने किसानों हेतु खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर कुमार ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता

होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ कुमार ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

WORLD खबर EXPRESS

रविवार

02 जुलाई, 2023

अंक - 424

WORLD खबर एक्सप्रेस

खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती कर किसान लें लाभ : डॉक्टर संजय कुमार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा की उद्यान वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार ने किसानों हेतु खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता, हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा, खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर कुमार ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ कुमार ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 05 कानपुर, सोमवार 03 जुलाई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

iyaswaroop.in

ज़िम्बाब्वे को नौ विकेट से हराकर विश्व कप में पहुंची श्रीलंका 10

वर्षा ऋतु में लौकी की खेती कर किसान लें लाभ

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा की उद्यान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार ने किसानों हेतु खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर कुमार ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है

लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ कुमार ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

SKS NEWS

हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

क: 308 कानपुर सोमवार, 03 जुलाई 2023 पृष्ठ -8

वर्षा ऋतु में लौकी की वैज्ञानिक खेती कर किसान लें लाभ

नगर प्रतिनिधि

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र जाजपुर बंजारा की उद्यान वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार ने किसानों हेतु खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर संजय कुमार ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर कुमार ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 – 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 – 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ कुमार ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।